This question paper contains 4+1 printed pages

Roll No. [ ]

S. No. of Question Paper : 5584

Unique Paper Code : 205639

Name of the Paper : Hindi A

Name of the Course : B.A. (Prog.)

Semester : VI

Page No-2 in Bottom

समय : 3 घण्टे | पूर्णांक : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

1. (क) किसी एक अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10

(i) अचल के शिखरों पर जा चढ़ी
किरण-पादप-शीश-विहारिणी।
तरणि-बिंब तिरोहित हो चला।
गगन-मंडल मध्य शनैः शनैः॥

(ii) गगन मंडल में रज छा गई।
दश-दिशा बहु शब्द-मयी हुई॥
विशद-गोकुल के प्रति-गेह में
बह चला वर-स्रोत विनोद का॥

(*iii*) इस उम्र में लड़कियाँ बहुत नादान होती हैं और जो कोई भी चार मीठी बातें करता है तो लड़कियाँ समझती हैं कि इससे ज्यादा प्यार उन्हें और कोई नहीं करता। और इस उम्र में जो कोई भी ऐरा-गैरा उनके संसर्ग में आ जाता है, उसे वे प्यार का देवता समझने लगती हैं और नतीजा यह होता है कि वे ऐसे जाल में फँस जाती हैं कि जिन्दगी भर उससे छुटकारा नहीं मिलता।

2. 'नीलदेवी' नाटक के आधार पर 'सूर्यदेव' का चरित्रांकन कीजिए।

अथवा

'नीलदेवी' की रंगमचीयता पर विचार कीजिए। 12

3. 'प्रियप्रवास' के आधार पर कृष्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'प्रियप्रवास' की कथावस्तु पर विचार करते हुए उसके शीर्षक की सार्थकता का मूल्यांकन कीजिए। 12

4. 'गुनाहों का देवता' के आधार पर 'सुधा' के चरित्र का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

'गुनाहों का देवता' में निहित प्रेम के स्वरूप का मूल्यांकन कीजिए। 12

5. (क) निम्नलिखित अवतरण के आधार पर 'नीलदेवी' की नाट्य-भाषा की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए : 9

शत बार धिक्कार है, सहस्र बार धिक्कार है उसको जो मनसा, वाचा, कर्मणा, किसी तरह इन कापुरुषों से डरे। लक्ष बार कोटि बार धिक्कार है उसको जो इन चांडालों के दमन करने में तृण-मात्र भी त्रुटि करे। (बायाँ पैर आगे बढ़ाकर) मलेच्छ-कुल के और उसके पक्षपातियों के सिर पर यह मेरा बायाँ पैर है, जो शरीर के हज़ार टुकड़े होने तक ध्रुव की भाँति निश्चल है, जिस पामर को कुछ भी सामर्थ्य हो हटावैं।

अथवा

(ख) निम्नलिखित अवतरण के आधार पर 'प्रियवास' की काव्य-भाषा का विश्लेषण कीजिए :

मुदित गोकुल की जन-मंडली।
जब ब्रजाधिप सम्मुख जा पड़ी॥
निरखने मुख की छवि यों लगी।
तृषित-चातक ज्यों घन की घटा॥

अथवा

(ग) निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर 'गुनाहों का देवता' उपन्यास की कथा-भाषा का विश्लेषण कीजिए :

घर चमक उठा था जैसे रेशम! लेकिन रेशम के चमकदार, रंगीन उल्लास भरे गोले के अन्दर भी एक प्राणी होता है, उदास स्तब्ध अपनी साँस रोककर अपनी मौत की क्षण-क्षण प्रतीक्षा करने वाला रेशम का कीड़ा। घर के इस सारे उल्लास और चहल-पहल से घिरा हुआ सिर्फ एक प्राणी था जिसकी साँस धीरे-धीरे कुम्हला रही थी, जिसकी चंचलता ने उसकी नज़रों से विदा मांग ली थी, वह थी—सुधा।

(ख) किन्हीं दो गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10+10=20

(i) हे प्यारी! वे अधर्म से लड़े, हम तो अधर्म नहीं कर सकते। हम आर्यवंशी लोग धर्म छोड़कर लड़ना क्या जानें ? यहाँ तो सामने लड़ना जानते हैं। जीते तो निज भूमि का उद्धार और मरे तो स्वर्ग। हमारे तो दोनों हाथ लड्डू हैं; और यश तो जीतें तो भी हमारे साथ हैं और मरें तो भी।

(ii) अपने अर्थशास्त्र के बावजूद वह यह समझता था कि आदमी की ज़िन्दगी सिर्फ़ आर्थिक पहलू तक सीमित नहीं और वह यह भी समझता था कि जीवन को सुधारने के लिए सिर्फ़ आर्थिक ढाँचा बदल देने-भर की ज़रूरत नहीं है। उसके लिए आदमी का सुधार करना होगा। वरना एक भरे-पूरे और वैभवशाली समाज में भी आज के-से अस्वस्थ और पाशविक वृत्तियों वाले व्यक्ति रहेंगे तो दुनिया ऐसी ही लगेगी जैसे एक खूबसूरत सजा-सजाया महल जिसमें कीड़े और राक्षस रहते हों।